Toppersnotes

Unleash the topper in you

# UGC-NET

## संस्कृत

**National Testing Agency (NTA)**

**पेपर 2 || भाग – 1**

SIERRA INNOVATIONS

# UGC NET पेपर – 2 (संस्कृत)


| क्र.सं. | अध्याय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| | **इकाई - I**<br>**वैदिक-साहित्य का सामान्य परिचय** | |
| **1.** | वैदों का काल एवं भारतीय साहित्य का परिचय | 1 |
| **2.** | संहिता साहित्य | 3 |
| **3.** | ऋग्वेद के प्रमुख संवाद सूक्त: विविध अध्ययन | 11 |
| | **इकाई - II**<br>**वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन** | |
| **4.** | ऋग्वेद के प्रमुख सूक्त: विशेष अध्ययन | 17 |
| **5.** | शुक्लयजुर्वेद | 28 |
| **6.** | अथर्ववेद | 28 |
| **7.** | ब्राह्मण-साहित्य | 30 |
| **8.** | उपनिषद्-साहित्य | 35 |
| | • ईशावास्योपनिषद् | 35 |
| | • केनोपनिषद् | 36 |
| | • कठोपनिषद्व | 38 |
| | • तैतिरीय उपनिषद (Taittiriya Upanishad) | 39 |
| | • वृहतदारण्यक उपनिषद (Brihadaranyaka Upanishad) | 40 |
| | • श्रेताश्वतर उपनिषद्द (Shvetashvatara Upanishad) | 40 |
| **9.** | वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति | 41 |
| | • ऋक्प्रातिशाख्य | 41 |
| | • निरुक्त का परिचय और आधार | 42 |
| | **इकाई - III**<br>**प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय** | |
| **10.** | दर्शनशास्त्र क्या है? (Philosophy) | 109 |
| | • चार्वाक दर्शनः एक विस्तृत अध्ययन | 110 |
| | • जैन दर्शनः एक सिद्धांत एवं प्रमाणिक परिप्रेक्ष्य | 112 |
| | • बौद्ध दर्शनः एक विस्तृत एवं प्रामाणिक अध्ययन | 113 |

| | | |
|---|---|---|
| | • सांख्य दर्शन (Sankhya Philosophy): एक विस्तृत अध्ययन | 114 |
| | • योग दर्शन (Yoga Philosophy): एक विस्तृत अध्ययन | 115 |
| | • न्याय दर्शन (Nyaya Philosophy): एक विस्तृत अध्ययन | 117 |
| | • मीमांसा दर्शन (Mimamsa Philosophy): एक विस्तृत अध्ययन | 120 |
| | • वेदान्त दर्शन (Vedanta Philosophy): एक विस्तृत अध्ययन | 121 |
| | **इकाई - IV**<br>**दर्शन-साहित्य का विशिष्ट अध्ययन** | |
| **11.** | सांख्यकारिका | 123 |
| **12.** | सृष्टिका (तत्व सिद्धान्त) | 125 |
| **13.** | प्रत्ययसर्ग (50 भेद) | 126 |
| **14.** | अनुबन्ध-चतुष्टय (वेदान्तसार) | 127 |
| **15.** | अज्ञान और उसकी शक्तियाँ | 128 |
| **16.** | अध्यारोप और अपवाद | 128 |
| **17.** | सूक्ष्म शरीर (सूक्ष्मशरीराणि) की उत्पत्ति | 129 |
| **18.** | पंचीकरण प्रक्रिया | 130 |
| **19.** | विवर्तवाद | 130 |
| **20.** | महावाक्य - 'तत्वमसि' | 131 |
| **21.** | जीवनमुक्ति (गीतत्पूंति) | 131 |
| **22.** | तर्कसंग्रह / तर्कभाषा (भाग-1) | 131 |
| **23.** | प्रमाण विचार (तर्कसंग्रह एवं तर्कभाषा) | 133 |
| **24.** | योगसूत्र (भाग-1) | 137 |
| **25.** | योगसूत्र (भाग-2) | 138 |
| **26.** | योगाङ्ग (अष्टांग योग) | 139 |
| **27.** | समाधि (सम्प्रज्ञात एवं असम्प्रज्ञात) | 139 |
| **28.** | कैवल्य (मोक्ष) | 140 |
| **29.** | ब्रह्मसूत्र (शांकरभाष्य) | 140 |
| **30.** | चतुःसूत्री (प्रथम चार सूत्रों का विशेष अध्ययन) | 140 |
| **31.** | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली | 141 |
| **32.** | सर्वदर्शनसंग्रह (जैन एवं बौद्ध दर्शन) | 143 |

# I - II UNIT

# वैदिक-साहित्य

## इकाई – I वैदिक-साहित्य का सामान्य परिचय

## वेदों का काल एवं भारतीय साहित्य का परिचय:

**1. वेदों का सारांश अध्ययन**

भारतीय धर्मग्रंथों में वेदों का स्थान सर्वोपरि है! वेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, अपितु मानव जीवन का प्राचीनतम ज्ञान-काण्डे हैं!

**वेद शब्द की व्युत्पत्ति**

'वेद' शब्द संस्कृत की 'विद्' धातु से 'घनन्' प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न् होता है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार 'विद्' धातु चार अर्थों में प्रयुत्म होती है:

1. विद् ज्ञाने: ज्ञान के अर्थ में (जानना)।
2. विद् सत्तायाम्: अस्तित्व के अर्थ में (होना)।
3. विद् विचारणे: विचार के अर्थ में (चिंतन)।
4. विद् लु लाभे: प्राप्ति के अर्थ में (प्राप्त करना)।

अत:, जिससे अलौकिक ज्ञान की प्राप्ति हो और सत्य का बोध हो, वही 'वेद' है। सायणाचार्य के अनुसार— "इष्यप्राप्तनिएपरिहारायसत्तात्मककम्अअथायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेद:।"

**वेदों की संख्या एवं संरचना**

- वेदों की संख्या चार है: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। प्रारम्भ में केवल प्रथम तीन वेदों को 'वेदत्रयी' कहा जाता था।
- वैदिक साहित्य की संरचना (चार भाग)
- प्रत्येक वेद के चार विभाग होते हैं
  1. संहिता: मन्त्रों का संग्रह।
  2. ब्राह्मण: मन्त्रों की व्याख्या और यज्ञीय विधि-विद्याना।
  3. आरण्यक: दार्शनिक और आध्यात्मिक चिन्तन (वानप्रस्थियों हेतु)।
  4. उपनिषद्: ब्रह्मज्ञान और आत्म-साक्षात्कार (वेदान्त)।

**2. वेदों के काल-निर्धरण की समस्या**

वेदों का काल-निर्धारण विक्ष के विद्धानों के समक्ष एक महान चुनौती रही है। इसके पीछे मुख्य कारण वेदों की श्रुति परम्परा (मौखिक) होना है।

**निर्धारण की पद्धतियाँ:**

- भाषावैज्ञानिक पद्धति: वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत की तुलना।
- खगोलशास्त्रीय पद्धति: वेदों में वर्णित ग्रहों, नक्षत्रों और ऋतुओं की स्थिति का गणितीय आकलन।
- पुरातात्विक आधार: बोगाझकॉय (Boghazkoi) जैसे शिलालेखों और उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य।
- ऐतिहासिक पद्धति: बुद्ध धर्म और समकालीन सभ्यताओं के साथ तुलना।

### 3. पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार वेदों का काल

#### (क) फ्रेडरिक मैक्समूलर (Friedrich Max Müller)

- **परिचय:** इनका जन्म 1823 में जर्मनी में हुआ था। ये प्रसिद्ध भाषाविद् और प्राच्यविद्या विशेषज्ञ थे। इन्होंने ऑक्सफोर्ड विध्धविद्यालय में रहकर वेदों पर व्यापक कार्य किया।
- **भारत से सम्बन्ध:** मैक्समूलर कभी भारत नहीं आए, किन्तु उन्होंने सायण भाष्य सहित ऋग्वेद का संपादन कर उसे पहली बार मुद्रित रूप में विश्व के सामने रखा।

**काल-निर्धरण का आधार:**

इन्होंने स्तर पद्धति (Layer Method) अपनाई। बुद्ध धर्म (500 ई.पू.) को आधार मानकर इन्होंने पीछे की ओर चार कालखंड बाँटे (प्रत्येक हेतु 200 वर्ष)

- छन्द काल: 1200-1000 ई. पू. (ऋग्वेद की रचना)।
- मन्त्र काल: 1000-800 ई.पू.।
- ब्राह्मण काल: 800-600 ई.पू.।
- सूत्र काल: 600-200 ई. पू.।

**आलोचना:** 200 वर्ष का मनमाना विभाजन अवैज्ञानिक था। स्वयं मैक्समूलर ने बाद में स्वीकार किया कि वेदों का काल निध्वित करना असंभव है।

#### (ख) अल्ब्रेख्ट वेबर (Albrecht Weber)

- **विचार:** वेबर ने मैक्समूलर के काल को ही स्वीकार किया, परन्तु उन्होंने भाषा वैज्ञानिक आधार पर तर्क दिया कि वैदिक साहित्य का विकास अत्यन्त मन्द गति से हुआ होगा, अत: इसे थोड़ा और प्राचीन (1500-1200 ई.पू.) मानना चाहिए।
- **आलोचना:** इनका आधार भी केवल अनुमान पर आधारित था।

#### (ग) हर्मन जैकोबी (Hermann Jacobi)

- **आधार:** इन्होने ज्योतिष (Astronomy) का सहारा लिया। कल्पसूत्रों में वर्णित 'धुव नक्षत्र' और 'कृतिका' की स्थिति के आधार पर गणना की।
- **प्रस्तावित काल:** इन्होंने वेदों का काल 4500 ई. पू. निर्धारित किया।
- **आलोचना:** कई विद्वानों का मानना है कि नक्षत्रो के वर्णन का अर्थ सदैव काल-विशेष नहीं होता।

#### (घ) बाल गंगाधर तिलक (B.G. Tilak)

- **पृष्ठभूमि:** भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और महान गणितज्ञा इन्होंने जेल यात्रा के दौरान वेदों का गहन अध्ययन किया।
- **ग्रन्थ:** 'Orion' (1893) और 'The Arctic Home in the Vedas' (1903)।
- **तर्क:** तिलक ने 'मुगशिरा' नक्षत्र और ऋग्वेद के मन्त्रों में वर्णित 'दीर्घ उपा' के आधार पर सिद्ध किया कि आर्य धुवीय प्रदेश से आए थे।

**काल-विभाजन:**

1. अदिति काल: 6000-4000 ई. पू.।
2. मुगशिरा काल: 4000-2500 ई. पू. (ऋग्वेद का संकलन)।
3. कृतिका काल: 2500-1400 ई.पू.

**आलोचना:** पाश्चात्य विद्वानों ने इनके ज्योतिषीय साक्ष्यों को 'काल्पनात्मक' कहकर नकारा, किन्तु भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह मत अत्यन्त मान्य है।

**(ङ) एम. विटरनिट्ज (Moriz Winternitz)**

- **दृष्टिकोण:** इन्होंने भाषा और साहित्य के क्रमिक विकास को देखा। इनका मानना था कि यदि 500 ई.पू. में बुद्ध के समय वैदिक धर्म पूर्णत: विकसित था, तो उसके प्रारम्भिक विकास में हज़ारों वर्ष लगे होंगे।
- **प्रस्तावित काल:** 2500-2000 ई.पू.

**4. भारतीय परंपरागत विचार - अपौरुषेयत्व**

भारतीय परंप्परा वेदों को काल की सीमा में नहीं बाँधती।

- **अपौरुषेय का अर्थ:** वेद किसी पुरुष (मनुष्य) द्वारा रचित नहीं हैं। वे ईश्वर के नि:श्वास हैं ("अस्य महतो भूतस्य नि:श्वसितमेतद्ग्वेदो...")
- **मीमांसा दर्शन:** महर्षि जैमिनि के अनुसार शब्द नित्य हैं, अत: वेद भी नित्य हैं।
- **मंत्रद्राष्टा:** ऋषि मंमंत्रों के रचयिता नहीं, अपितु 'द्रष्टा' (Seers) हैं। उन्होंने समाधि की अवस्था में इन सत्यों का साक्षात्कार किया।
- **शंकराचार्य:** वेदों को 'स्वतःप्रमाण' और 'नित्य' मानते हैं।
- **श्रुति परंपरा:** वेदों को 'श्रुति' इसलिए कहा गया क्योंकि इन्हें ईश्वर से ऋषियों ने सुना और गुरु-शिष्य परंपरा से सुरक्षित रखा।

| **विज्ञान का नाम** | **काल-निर्धारण (Date)** | **मुख्य आधार (Basis)** | **प्रमुख ग्रन्थ** |
|---|---|---|---|
| वैदसमूलर | 1200 ई.पू. | वेद्द धर्म/स्तर पद्धति | Physical Religion |
| ए. बेवर | 1500-1200 ई.पू. | भाषाई विकास | Hist. of Indian Lit. |
| हर्मन जैकोबी | 4500 ई.पू. | ज्योतिय (लक्षण) | On the Date of Rigveda |
| बी.जी. तिलक | 6000-4000 ई.पू. | खगोल/ध्रुवीय साध्य | Orion, Arctic Home |
| विन्टरनिट्ज | 2500-2000 ई.पू. | साहित्यिक विकास | Hist. of Indian Lit. |
| भारतीय परम्परा | अनादि / नित्य | अपौरूषेयत्व | ऋग्वेद भाष्य भूमिका |

## संहिता साहित्य

**ऋग्वेद संहिता:** सम्पूर्ण शास्त्रीय एवं परीक्षात्मक विवेचन

- ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ और वैदिक वाड्मय का आधार स्तम्भ है।
- 'ऋक्' (ऋच्यते स्तुवते अनया इति ऋक्) का अर्थ है-सुतिपरक मन्त्र।
- ऋषियों द्वारा साक्षाल्कृत इन मन्त्रों के संकलन को 'ऋग्वेद संहिता' कहा जाता है।

**ऋग्वेद की संरचना**

ऋग्वेद के विधान की दो पद्धतियां प्रचलित हैं-

1. मण्डल क्रम और
2. अष्टक क्रम।
3. मण्डल व्यवस्था (ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक क्रम)

यह क्रम देश और ऋषियों के आधार पर निर्धारित है और शोध की दृष्टि से सर्वाधिक मान्य है।

- कुल मण्डल 10
- अनुवाक 85
- सूकत 1028 (1017 मूल +11 बालखिल्य सूदत)
- मन्त्र संख्या 10,552 (शांकिल सहित। के अनुसार) शौनक की अनुस्मरणी के अनुसार (10,580) भी माना जाता है।

**परिवार मण्डल (2 से 7)**

इन्हें 'वंश मण्डल' या 'पारितारिक मण्डल' कहा जाता है। ये ऋग्वेद के प्राचीनतम भाग माने जाते हैं। ऋग्वेद मण्डल एक विशिष्ट ऋषि परिवार को समर्पित हैं।

- ऋतिज गृत्समद (भार्वत वंश)
- तृतीय-वसिष्ठ (प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र 3.62 .10 इसी में है)
- चतुर्थ- वामदेव (गौतम वंश)
- पंचम-अत्रि
- षष्ठ- भरद्वाज (अंगिरस वंश)
- सप्तम- वशिष्ठ

**प्रथम एवं द्वितीय मण्डल की विशेषताएँ**

- इन दोनों मण्डलों को 'अवचेतन (वाद का) माना जाता है।
- प्रथम मण्डल को 'शगतितिम' मण्डल कहते हैं क्योंकि इसमें ऋषियों ने 100-100 ऋचाएँ देखी हैं।
- द्वितीय मण्डल में दार्शनिक सूक्त (पुरुष, नासदीय, हिरणयगर्भ) और संवाद सूक्तों की प्रधानता है।
- नवम मण्डल पूर्णतः 'पवमान सोम' को समर्पित है।

## ऋग्वेद संहिता: दशमण्डलानां विस्तृत विवरणम्

## (10 मण्डलों का विवरण)

**प्रथम मण्डल (ऋषि: शततिन:)**

- विशेषता: इसे 'श्रुतमग्म्' और 'महामाम्' का समिश्रण माना जाता है। इसमें अनेक ऋषियों (जैसे मधुच्छन्द, मेधातिथि आदि) ने मन्त्र दर्शन किए हैं।
- विषय: इसमें अग्नि, इन्द्र, वरुण और अश्विनि कुमारों की स्तुतियाँ प्रधान हैं। इसी मण्डल में प्रसिद्ध सूक 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' (1.164.46) ग्राम होती है।
- मन्त्र संख्या: 2006 मन्त्र।

**द्वितीय मण्डल (ऋषि:-गृत्समद:)**

- विशेषता: यह प्राचीनतम 'वश मण्डल' का प्रारम्भिक मण्डल है।
- विषय: इस मण्डल में इन्द्र के पराक्रमों का वर्णन है। यहाँ 'इन्द्र' को 'सम रश्मि' और 'वृषभ' के रूप में वर्णित किया गया है।
- मन्त्र संख्या: 429 मन्त्र।

**तृतीय मण्डल (ऋषि:-विश्वामित्र:)**

- विशेषता: यह मण्डल गायत्री मन्त्र के कारण सर्वाधिक पवित्र माना जाता है।
- विषय: इसमें विश्वामित्र-नदी संवाद (3.33) और विपाशा-शुतुद्वि नदियों का वर्णन है। यहाँ अग्नि को 'भरत' भी कहा गया है।
- मन्त्र संख्या: 617 मन्त्र।

**चतुर्थ मण्डल (ऋषि:-वामदेव:)**

- विषयता: यह मण्डल आध्यात्मिक और दार्शनिक रहस्यों से पूर्ण है।
- विषय: इसमें कवि सूक्त की प्रधानता है। वामदेव के स्वप्न (बाज) पक्षी बनकर ज्ञान लाने का स्वरूप यहाँ प्राप होता है।
- मन्त्र संख्या: 589 मन्त्र।

**पञ्चम मण्डल (ऋषि:-अत्रि:)**

- विषयता: अत्रि ऋषि के वंशजों द्वारा गृह होने के कारण इसे अत्रि मण्डल कहते हैं।
- विषय: इसमें मरूत और अग्नि की स्तुतियाँ अत्यन्त कालात्मक हैं। इसी मण्डल में रात्रि सूद्त का प्रारम्भिक स्वरूप देखा जा सकता है।
- मन्त्र संख्या: 727 मन्त्र।

**षष्ठ मण्डल (ऋषि:-भरद्वाज:)**

- विषयता: भरद्वाज (अंगिरस वंश) के ऋषि हैं।
- विषय: इस मण्डल में पवित्र देवता का विशिष्ट वर्णन है। इसमें अश्व-शव और यज्ञों का भी उल्लेख प्राप होता है।
- मन्त्र संख्या: 765 मन्त्र।

**समम मण्डल (ऋषि:-वशीष:)**

- विषयता: यह मण्डल अपनी उदात्त भावना और करण देव की भक्ति हेतु प्रसिद्ध है।
- विषय: इसमें प्रसिद्ध दाशराज युद्ध (10 राजाओं का युद्ध) और मण्डूक सूक्त (7.103) प्राम होता है। वरुण देव के 'पाश' का वर्णन यहाँ मिलता है।
- मन्त्र संख्या: 841 मन्त्र।

**अष्टम मण्डल (ऋषि:-कप्य: एवं अदुनिगा:)**

- विषयता: इसमें प्रागाश ऋषियों की प्रशंसा है।
- विषय: इस मण्डल में 11 बालखिल्य सूक्त (49-59) संकलित है। इसमें इन्द्र को ‘दान’ देने वाले राजाओं की सूति (दानस्तुति) अधिक है।
- मन्त्र संख्या: 1716 मन्त्र (बालखिल्य सहित)।

**नवम मण्डल (ऋषि:-पवमान: सोम:)**

- विषयता: यह ऋग्वेद का एकमात्र मण्डल है जो केवल एक ही देवता को समर्पित है।
- विषय: इसमें सोम रस के शोधन, उसकी महिमा और ऋषियों के आध्यात्मिक आनंद का वर्णन है। इसे ‘पवमान मण्डल’ कहा जाता है।
- मन्त्र संख्या: 1108 मन्त्र।

**दशम मण्डल (ऋषि:-विस्बामित्र ऋषय:)**

- विशेषता: यह ऋग्वेद का अन्तिम और दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मण्डल है।
- विषय: इसमें पुरुष सूक्त (वर्ण व्यवस्था), नासदीय सूक्त (सुष्टि उत्पत्ति), हिरण्यगर्भ सूक्त और अनेक संवाद सूक्त (यम-यमी, पुरूर्शवा-उर्वशी, सरमापाणि) प्राप्त होते हैं।
- मन्त्र संख्या: 1754 मन्त्र।

**अथम मण्डल (ऋषि:-कपय: एवं अदुनिगा:)**

- विशेषता: इसमें प्रगाथ ऋषियों की प्रशंसा है।
- विषय: इस मण्डल में 11 बालखिल्य सूक्त (49-59) संकलित हैं। इसमें इन्द्र को 'दान' देने वाले राजाओं की स्तुति (दानस्तुति) अधिक है।
- मन्त्र संख्या: 1716 मन्त्र (बालखिल्य सहित)।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

**नवम मण्डल (ऋषि:-पवमान: सोम:)**

- विशेषता: यह ऋग्वेद का एकमात्र मण्डल है जो केवल एक ही देवता को समर्पित है।
- विषय: इसमें सोम रस के शोधन, उसकी महिमा और ऋषियों के आध्यात्मिक आनंद का वर्णन है। इसे 'पवमान मण्डल' कहा जाता है।
- मन्त्र संख्या: 1108 मन्त्र।

**मण्डल-ऋषि सारणी**

| मण्डल क्रम | प्रथम ऋषि | मुख्य पहचान |
|---|---|---|
| 01 | शार्तिमां: | विविध ऋषि, 100 ऋचाओं के द्रष्ण |
| 02 | गुत्समद: | प्राचीनतम वंश मण्डल |
| 03 | विस्बामित्र: | गायत्री मन्त्र (3.62.10) |
| 04 | वामदेव: | कृषि एवं गर्भ ज्ञान |
| 05 | अत्रि: | मक्त एवं अन्नि स्तुति |
| 06 | भरद्राज: | पूपन एवं वीरता सूक्त |
| 07 | वशिष: | दाशराज्ञ युद्ध, वरुण भक्ति |
| 08 | कण्व: | बालखिल्य सूक्त (11) |
| 09 | पवमान सोम | केवल सोम को समर्पित |
| 10 | विषय, श्रद्धा आदि | दार्शनिक एवं संवाद सूक्त |

**प्रश्न: 'मण्डूक-मुत्ता' ग्रन्थद्धय कतमै मण्डले रचिते?**

(A) तृतीय मण्डले (B) समम मण्डले (C) नवम मण्डले (D) दशम मण्डले

**1. अष्टक व्यवस्था (अध्ययन एवं पाठ क्रम)**

यह विधान कवेल गणना की सुविधा के लिए किया गया है ताकि पाठ करने वाला विद्यार्थी समम भागों में अध्ययन कर सके।

- कुल अष्टक 08
- अध्याय 64 (प्रत्येक अष्टक में 8 अध्याय)
- वर्ष 2024

**2. तुलनात्मक विवेचन: मण्डल बनाम अष्टक**

मण्डल पद्धति ऋचि-वर्ग पर आधारित होने के कारण ऐतिहासिक महत्व रखती है, जबकि अष्टक पद्धति 'अक्षर-गणना' और 'परिमांण' पर आधारित होने के कारण यान्त्रिक है।

**प्रश्न 1: ग्रन्थद्धय अष्टकक्रमे कति वर्गा: उपलब्ध्यन्ते?**

(A) 1028 (B) 2018 (C) 2024 (D) 1017

**प्रश्न 2: अधोलिखितेषु मण्डलक्रम-अष्टकक्रमयो: विशेषे किं सम्यक् अस्ति?**

(A) मण्डलक्रम: ऐतिहासिक:, अष्टकक्रम: च यान्त्रिक: अस्ति

(B) मण्डलक्रम: केवलं दशसू अष्टकानां विषयः अस्ति

(C) अष्टकक्रमे केवलं पच्च अष्टका: सन्ति

(D) इदौ: क्रमयो: कोऽपि भेद: नास्ति

### ऋचिदेव की शाखाएँ

पतजजलि ने महाभाध्य में क्रचिदेव की 21 शाखाओं का उत्लेख किया है- "एकविंशतिया बाहव्ययम्"। शौनक के 'चरणव्याह' के अनुसार 5 प्रमुख शाखाएँ है।

- शौनक वर्तमान में केवल यही शाखा पूर्ण रुप से उपलव्ध है।
- वाष्कल इसमें 1017 के स्थान पर 1025 सूक्त माने जाते हैं (8 अतिरिक्त सूक्तों के कारण)।
- आक्षलायन: केवल श्रौत एवं गृह्मसूत्र उपलव्ध है।
- शाष्बायन इसे वैगानि भी कहते है।
- माण्डूकायण म्रम्पति अनुपलव्ध।

### देवता-सूक्त विथेषण

- इन्द्र प्रवांसिक लोकप्रिय देवता (लगभग 250 सूक्त)।
- अनि द्वितीय स्थान (लगभग 200 सूक्त)। ऋचिदेव का प्रथम मन्त्र अग्नि को समर्पित है।
- सोम तृतीय स्थान (लगभग 120 सूक्त)।
- वरुण नैतिक नियमों के रक्षक (ऋतस्य गोपा)।

### देवता-मन्त्र वर्गीकरण

यास्क के 'निधणदु' के अनुसार देवताओं का वर्गीकरण तीन लोकों के आधार पर किया गया है।

- **लोक (Region)**
  - पूध्वीस्थानीय
  - अन्तरिक्षस्थानीय
  - ध्युस्थानीय
- **अधिपति देवता**
  - अग्नि
  - इन्द्र
  - सूर्य
- **अन्य प्रमुख देवता**
  - सोम, पूध्वी, बहस्पति, सरस्वती
  - मरत, रुद्र, वायु, पूर्वन्न, आप:
  - बरुण, मित्र, विष्णु, उपय, अभिभो

### महत्वपूर्ण तथ्य (One-liner Revision)

- ऋग्वेद का प्रथम सूक्त ‘अन्नि’ और अन्तिम ‘संत्रान’ सूक्त है।
- वालखिल्य सूक्तों की संख्या 11 है जो 8 वें मडल में हैं।
- ऋग्वेद में 'होता' ऋत्विक का सम्बन्ध है।
- 'वशिष्ठ' क्रषि समाम मडल के द्रहा हैं।
- ऋग्वेद की भाषा 'वैदिक संस्कृत' है जिसमें स्वर प्रक्रिया प्रधान है।
- सायण का ऋग्वेद भाष्य 'माधवीय वेदार्थप्रकाश' कहलाता है।
- ऋग्वेद में कुल 33 देवताओं का उल्लेख मुख्य रुप से मिलता है।

- 'अदिति' को देवताओं की माता कहा गया है।
- 'वामदेव' ऋषि ने गर्भ में ही ज्ञान प्राप्त किया था (चतुर्थ मख्डल)।
- ऋग्वेद का प्राचीनतम भाष्यकार 'स्कन्दस्वामी' को माना जाता है।
- धुस्थानीय देवताओं में 'वरण' का स्थान नैतिक द्रहि से सर्वोच्च है।
- 'पुरुरवा-उर्वशी' संवाद दशम मडल (10.95) में वर्णित है।
- 'अक्ष सूक्त' (10.34) में चत-कीड़ा के दुष्परिणामों का वर्णन है।
- 'नासदीय सूक्त' (10.129) सृष्टि-उत्पत्ति का दार्शनिक विवेचन करता है।
- 'विष्णु' के तीन पगों (उरुगाय) का वर्णन ऋग्वेद में विस्तार से मिलता है।
- ऋग्वेद में 'उपास' को आकास की पुजी (दिवो दहिता) कहा गया है।
- ऋग्वेद का अधक क्रम मुख्वतः पाठ के परिणाण पर आधारित है।
- 'पुरुष सूक्त' (10.90) में सर्वप्रथम चारों वर्णो की उत्पत्ति का उल्लेख है।
- ऋग्वेद का पाठ 'श्रावण पूर्णिमा' को विशेष रूप से किया जाता है।

### NET परीक्षा संभावित Trap Areas (सावधान रहें)

- मूल संख्या विकल्प में (10580) और 10552 दोनों होने पर (10552) (शाकल) को प्राथमिकता दें।
- ऋषि मिलान विषयक्रम (3) और वैध (7) के मण्डलों में अवसर भ्रम होता है।
- संवाद सूक्त यम-यमी (10.10) और पुरुषा-उर्वशी (10.95) के क्रम को ध्यान से देखें।
- देवता स्थान-विष्णु को अन्तरिक्ष स्थानीय समझने की गलती न करें, वे 'मुख्य देवताये' हैं।

### 1. सामान्य परिचय एवं व्युत्पत्ति

- व्युत्पत्ति: 'यजु' (पूजा-यज्ञ) धातु से 'उसि' प्रत्यय लगाकर 'यजुस्' शब्द बनता है।
- लक्षण: "अनिवाताक्षावसानो यजुः" अर्थात जिसमें अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती (गाथात्मक), उसे यजुस् कहते है। "गाथात्मकों यजुः" भी इसकी प्रमुख पहचान है।
- अस्तित्व : यजुर्वेद का मुख्य अस्तित्व श्रक्क्युं होता है, जो यज्ञा का वास्वविक संचालन (क्रियापथ) करता है।
- महत्व: इसे 'अध्ययूवेन्द' भी कहा जाता है। यज्ञीय विधियों की प्रधानता के कारण इसे 'कर्मकाण्ड का वेद' माना जाता है।

### 2. यजुर्वेद का अर्थ्य-विषय (Content)

यजुर्वेद के मुख्य रूप से दो भागों और विधियों का संग्रह है जिनका उपयोग पूर्णस्त यज्ञादों पर आधरित होने समय होता है।

- इसमें संगोपावाक्य, चाल-चलन, मंत्रपाठ, स्तोप्रपाठ, आर्षथ और सौमयागों जैसे प्रमुख यज्ञों को विस्तार से बताया गया है।
- इसमें वैविाण नियम, पाठों का क्रम और यज्ञ की सूक्ष्म प्रक्रियाओं का वर्णन है।

### 3. यजुर्वेद के दो मुख्य भेद (Branches/Divisions)

यजुर्वेद के दो संप्रदाय सर्वमान्य हैं: शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद।

### (क) शुक्ल यजुर्वेद (वाजसनेयी संहिता)

इसे 'आहिसस संप्रदाय' भी कहते हैं। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें केवल 'मन्त्र' भाग है, ब्राहाण (व्याख्या) भाग पृथक है।

- **मुख्य उप-विषय एवं विशेषताऍं:**
  - **शाखाऐं:** इसकी दो मुख्य शाखाऐं उपलब्ध हैं- माध्यनदिन (उत्तर भारत में प्रचलित) और काण्व (दक्षिण भारत में प्रचलित)।
  - संरचना: इसमें 40 अध्याय और 1975 मन्त्र (वाजसनेयी संहिता) हैं।
  - प्रमुख सूक्त: शिवसंकल्प सूक्त (अध्याय 34), पुरुष सूक्त (अध्याय 31), छात्राध्यायी (अध्याय 16)।
  - अंतिम अध्याय: इसका 40 वाँ अध्याय 'ईशावास्योपनिषद' है, जो ज्ञानकाण्ड का आधार है।

**(ख) कृष्ण यजुर्वेद**

इसे 'तैतिरीय संप्रदाय' कहा जाता है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें 'मन्त्र' और उनकी व्याख्या (त्राह्मण) भाग, आपस में मिले हुए हैं।

- **मुख्य उप-विषय एवं विशेषताई:**
  - **शाखाऐं:** इसकी चार प्रमुख शाखाऐं प्रसिद्ध हैं- तैतिरीय, मैत्रायणीय, काठ और कपिष्ठल।
  - **संरचना:** यह काण्डों, प्रपाठकों और अनुवाकों में विभाजित है।
  - **विशेषता:** इसमें मन्त्रों के आराण्यकों और तैतिरीय ब्राह्मणों का ब्राहमण भाग के साथ समन्वय किया गया है।

**4. परीक्षा-दृष्टि से विशिष्ट तथ्य (Authentic Data)**

| विवरण | शुक्ल यजुर्वेद | कृष्ण यजुर्वेद |
|---|---|---|
| ऋत्विक | अध्वर्यु | अध्वर्सु |
| उपवेद | धनुर्वेद | धनुर्वेद |
| प्रमुख ब्राह्मण | शतपथ ब्राह्मण | तैतिरीय ब्राहण |
| भाष्यकार | उवट, महीधर | सायण, मधुसूदनकर |

**Q. 'अनिवाताक्षतवासानो यजु:' - इसे लक्षण किस असित?**

(A) ऋक्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य (C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

**Q. शुक्ल-यजुर्वेदस्य अपर नाम किम अस्ति?**

(A) वाजसनेयी-संहिता (B) तैततिरीय-संहिता (C) काठक-संहिता (D) आश्यलायन-संहिता

**Q. 'एकश्रावमध्वर्धुगधा:' इति केन उत्कम्?**

(A) सायण (B) पतंजलि (C) यास्क (D) शौनक

**1. सामान्य परिचय एवं स्वरुप**

- व्युत्पक्ति: 'साम' शब्द 'सा' (सज्ञा) और 'अम' (बहुत आदि स्वर) के योग से बना है। "सा च अमशीत साम"
- ऋत्विक: सामवेद का मुख्य ऋत्विक उद्गता होता है, जो यज्ञों में सामगान करता है।
- विषयवस्तु: सामवेद के अधिकांश मन्त्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के कुछ मन्त्रों को छोड़कर शेष मन्त्रों पर संगीत के स्वर बिठाए गए हैं।
- विभाजन: सामवेद दो मुख्य भागों में विभक्त है:

  **(1)आर्चिक (पूर्वार्चिक):** इसमें 6 प्रपाठक हैं और देवताओं के अनुसार 'अग्नेय', 'ऐन्द', 'पावमान' काण्डों में विभाजित है।

  **(2)उत्तरार्चिक:** इसमें 9 प्रपाठक हैं और यह यज्ञीय अनुषानों के क्रम में व्यवस्थित है।

**2. सामवेद की गान-पद्धति (Musical Methodology)**

- सामवेद की गायन प्रक्रिया ही इसे अन्य वेदों से अलग बनाती है। साम-बिकार (6 प्रकार)
- गायन के समय मूल मन्त्र में जो परिवर्तन किए जाते हैं, वे 6 हैं:

  (1) विस्तार: वर्ण परिवर्तन (जैसे- 'अस्मे' को 'अस्मायि' करना)।

  (2) विशेषण: पदों को अलग करना (जैसे- 'वीतये' को 'स्वीति तोयायथि' करना)।

  (3) विकर्णण: स्वर को नीचे करना।

  (4) अभ्यास: पदों की आवूत्ति।

  (5) विराम: गायन के मध्य रुकना।

  (6) स्तोभ: अतिस्कि शब्द जोड़ना (जैसे- 'हाउ', 'हाव', 'इ')।

**Q. 'अनिवाताश्रववासनां यजु:' - इसे लक्ष्यण किम अस्ति?**

(A) ऋक्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य (C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

**Q. 'अनिवाताश्रववासनां यजु:' - इसे लक्ष्यण कस्य अस्ति?**

(A) महर्षि याजवल्क्य भी इसी (शुक्ल) से सम्बण्धित थे (B) पठनशैली
(C) शब्द अर्थ (D) छन्द शैली

3. सामवेद की शाखाएँ एवं ब्राह्मण पतम्जलि के अनुसार सामवेद की एक हजार शाखाएँ थी- "सहस्त्रवर्स्ब सामवेद:"। वर्तमान में उपलब्ध 3 मुख्य शाखाएँ:
   - कौथुम: यह गुजरात और उत्तर भारत में सर्वाधिक प्रचलित है।
   - राणायनीय: यह महाराष्ट्र और कर्नाटक में प्रचलित है।
   - जैमिनीय (तलबकार): यह शाखा केवल कर्नाटक के कुछ भागों में उपलब्ध है।
   - प्रमुख ब्राह्मण: सामवेद के 8 (या 9) ब्राह्मण प्रसिद्ध हैं, जिनमें ताण्डय (पंचविंश) और षड्विंश ब्राह्मण परीक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

**Q. 'गीतिसु सामाख्या' - इसे सूत्र कुत्र अस्ति?**

(A) पूर्वमीमांसाटायम् (B) उत्तरमीमांसाटायम् (C) व्याकरणमहाभाष्ये (D) निरक्ते

**अथर्ववेद सहिता:** ब्रहमविद्या एवं लौकिक विज्ञान का संगम अथर्ववेद का नाम 'अथर्वा' ऋषि के नाम पर पड़ा है। महर्षि पतंज्ञलि के अनुसार"नवधा अथर्वणो वेद:" अर्थात् अथर्ववेद की नौ शाखाएँ हैं।

**1. सामान्य परिचय एवं अन्य नाम**
   - व्युत्पत्ति: 'अथर्वी' शब्द 'अथ' (तति/चंचलता) धातु में 'अ' निषेध वाचक जुड़कर बना है, जिसका अर्थ है- 'स्थिरता' या 'अचल ज्ञान'।
   - ऋत्विक: अथर्ववेद का प्रधान ऋत्विक 'बहमा' होता है। ब्रह्मा का कार्य यज्ञ का पूर्ण निरीक्षण करना और त्रुटियों का परिहार (प्रायश्चित) करना है।
   - अन्य नाम: अथर्ववेद 'ब्रह्मा का वेद' होने के कारण।
   - भैषज्य वेद: रोगों की चिकित्सा और औषधियों का वर्णन होने के कारण।
   - अग्निवीर: अग्नि ऋषि के नाम पर।
   - क्षेत्रवाद: राजा के कर्तव्यों और राष्ट्र-धर्म का वर्णन होने के कारण।
   - विभाजन (शौनक शाखा): जिसमें कुल 20 कांड, 730 सूक्त और लगभग 6000 मन्त्र हैं।

**2. अथर्ववेद की शाखाएँ एवं प्रमुख ग्रन्थ**
   - पतंजलि के महाभाष्य के अनुसार इसमें 9 शाखाएं थीं, जिनमें से वर्तमान में केवल दो ही मुख्य रूप से उपलब्ध हैं।
   - **प्रमुख शाखाएँ:**

     (1) शौनक: यह सर्वाधिक प्रचलित और मान्य शाखा है। UGC NET का अधिकांश भाग इसी पर आधारित होता है।

     (2) पैप्पलाद: यह शाखा कश्मीर और ओडिशा के कुछ क्षेत्रों में उपलब्ध है।
   - अन्य (लुप्तप्राय): मौद, स्तोभ, जालद, जाजल, ब्रह्मावेद, देवदर्श और चारणवेदत्न।

**विशिष्ट प्रश्न:**

ब्राह्मण: अथर्ववेद का केवल एक ही ब्राह्मण उपलब्ध है - गोपथ ब्राह्मण

- उपनिषद: मुण्डक, माण्डूक्य और प्रश्न उपनिषद अथर्ववेद से ही सम्बद्ध हैं।
- प्रातिशाख्य: शौनकीय चतुराध्यायिका।

3. **प्रमुख प्रतिपाद्य विषय (Varnay-Vishay) अथर्ववेद का विषय-विस्तार अत्यंत व्यापक है:**
    - **भाक्सण:** विभिन्न रोगों (जैसे ज्वर, कुष्ठ, यक्ष्मा) का निदान और औषधियों का ज्ञान।
    - **राजधर्म:** राजा का निर्वाचन, सभा-समिति का वर्णन और राष्ट्र की व्यवस्था।
    - **भूवियी सूक्त (12.1):** इसे 'भूमि सूक्त' भी कहते हैं इसमें "माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:" का प्रसिद्ध उदास है।
    - **अध्यात्म:** रात का स्वरूप और ब्रह्म की दार्शनिक विवेचन।

1. **शुक्ल-यजुर्वेदस्य अपर नाम किम् अस्ति?** **(UGC NET 2018, 2021)**
    (A) काठक-संहिता (B) वाजसनेयि-संहिता
    (C) तैतिरीय-संहिता (D) मैत्रायणि-संहिता

2. **'एकशतसमध्ववशुंगावा:' इति पन्तजललिना कस्य वेदस्य कुते उल्तष?** **(UGC NET 2015, 2020)**
    (A) क्रग्वेदस्य (B) सामवेदस्य (C) यजुर्वेदस्य (D) अथर्वत्वेदस्य

3. **सामवेषदस्य ऋत्विक् क: अस्ति?** **(UGC NET 2016, 2019, 2023)**
    (A) होता (B) अध्वरर्यु (C) उदाता (D) ब्रह्मा

4. **'नवधा आध्वणो वेद:' - इति केन प्रोक्तम्?**
    (A) सायणेन (B) यास्केन (C) पाणिनिना (D) शौनकेन

5. **"माता छुमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:" - इयं सूक्ति: कुत्र अस्ति?**
    (A) क्रग्वेदे (B) यजुर्वेदे (C) सामवेदे (D) अथर्ववेदे

6. **'गीतीषु सामाख्या' इति सूत्रं कस्य दर्शनस्य अस्ति?** **(UGC NET 2019, 2021)**
    (A) न्यायदर्शनस्य (B) मीमांसादर्शनस्य (C) सांख्यदर्शनस्य (D) योगदर्शनस्य

## ऋग्वेद के प्रमुख संवाद सूक्त: विविध अध्ययन

ऋग्वेद के 108 प्रमुख में संवाद सूक्तों की प्रधानता है। इन्हें 'आख्यान सूक्त' भी कहा जाता है, जो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रकाव्यों के आयाम बने।

1. **पुरुष्वा-उर्वशी संवाद (ऋग्वेद 10.95)**
    यह ऋग्वेद का सर्वाधिक नाटकीय और विख-प्रधान सूक्त है। इसमें मर्त्य राजा पुरुष्वा और दिव्य अप्सरा उर्वशी के मध्य का विचित्र प्रणय है।
    - मण्डल एवं सूक्त संख्या: 10.95 (10वॉ मण्डल, 95वॉ सूक्त)
    - ऋषि एवं देवता: पुरुष्वा ऐल (ऋषि) और उर्वशी (देवता)।
    - कुल मन्त्र एवं छन्द: 18 मन्त्र; मुख्य रूप से त्रिष्ठुप छन्द।

2. **नाटकीय एवं दार्शनिक सार:**
    - उर्वशी राजा को छोड़कर जा रही है। पुरुष्वा उसे रोकने के लिए आत्मदाह तक की धमकी देते हैं, किन्तु उर्वशी नितान्त भाव से कहती हैं कि स्त्रियों का प्रेम शाश्वत नहीं होता।
    - कथानकः उर्वशी ने पुरुषवा के साथ कुछ शर्ता पर समय बिताया था। शर्त टूटने पर वह चली जाती है। पुरुषवा उसे वापस बुलाने के लिए 'आशिष' (मानसिक पीड़ा) का वर्णन करते हैं, किन्तु उर्वशी दृढ़ रहती है।

- **महत्त्वपूर्ण मन्त्र (स्मृति):**
  "न बै शेयणामि सहस्यर्णि मनि शालावाकाणां हदयान्तरेता:।" (10.95.15)
- **अर्थ:** स्त्रियों की मित्रता स्थायी नहीं होती, उनके हदय भेड़िये के समान निम्द्ध होते हैं। (यह उर्वशी का कथन है।)

3. सामवेदस्य कृविग्क क: अस्ति?

   (A) होता (B) अधयनुं (C) उदाता (D) ब्रह्मा

**ऋग्वेद के प्रमुख संवाद सूक्त: विविध अध्ययन**

ऋग्वेद के 108 प्रमुख में संवाद सूक्तों की प्रधानता है। इन्हें 'आख्यान सूक्त' भी कहा जाता है, जो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रकावयों के आयाम बने।

1. पुरुरवा-उर्वशी संवाद (ऋग्वेद 10.95) का कथानक केवल एक प्रेम कथा नहीं है, बल्कि यह मर्त्य (मनुष्य) और अमर (अमराा) के बीच के द्रंद, विरह और जीवन की निषुर सच्चता का चित्रण है।
2. **विस्तृत कथानक और पुछभूमि**
   1. **मिलन और प्रेम (अनुरक्त:):**
      उर्वशी, जो एक अप्सरा है, किसी कारणवश स्वर्ग से न्यून होकर पृथ्वी पर आती है। राजा पुरुरवा उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। उर्वशी राजा के साथ रहने के लिए तैयार होती है, लेकिन वह तीन कठिन शर्तें रखती है:
      1) राजा कभी नग्न अवस्था में उसे न दिखें।
      2) राजा उसके दो भेड़ों (गणपति) की रक्षा पुस्वत करेंगे।
      3) राजा केवल घृत (घी) का ही आहार ग्रहण करेंगे।
   2. **शर्तों का भंग होना:**
      उर्वशी के साथ पुरुरवा ने चार वर्ष (कुछ मतों के अनुसार छह वर्ष) बिताए। गंधर्वों को उर्वशी की कमी खलने लगी, इसलिए उन्होंने षड़यंत्र रचा। एक रात्रि गंधर्वों ने उर्वशी के उन भेड़ों को चुरा लिया। उनकी आवाज सुनकर राजा पुरुरवा उल्हें बचाने के लिए बिना वस्त्रों के ही अंधेरे में दौड़ पड़े। उसी समय गंधर्वों ने बिजली चमका दी, जिससे उर्वशी ने राजा को नग्न अवस्था में देख लिया। शर्त टूटते ही उर्वशी बिजली की तरह अदश्य हो गई।
3. **पुरूरवा का विलाप और अन्वेषण:**
   - उर्वशी के जाने से राजा उन्मत्त (पागल) हो हो गए और कुरूथेंब के
   - 'अन्यात: प्रेयाग' नामक सरोवर के पास पहुँच गए। वहाँ उर्वशी अन्य अप्सराओं के साथ जल-क्रीड़ा कर रही थी। वहीं से ऋग्वेद का 10.95 सूक्त (संवाद) आरम्भ होता है।
   - प्रमुख मंत्रों का भावार्थ और विशिष्टता
   - इस सूक्त में कुल 18 मंत्र हैं। पुरूरवा प्रार्थना करते हैं, जवकि उर्वशी उन्हें कर्तव्य का बोध कराती है।
4. **पुरूरवा की विनती (मंत्र 1) एवं उर्वशी का दोटूक उत्तर (मंत्र 2):**
   - **पुरुरवा की विनती (मंत्र 1):**
     "हे जाये ममसा तिष्ठ घोरे त्वमस्मि मिश्रा कृणवावहे तु...।"
     राजा कहते हैं- "हे तिष्ठ पत्नी! एक जाओ, हम कुछ पल रूककर बातें तो कर लें। यदि हमारे विचार आपस में नहीं मिले, तो भविष्य में हमें सुख नहीं मिलेगा।"
   - **उर्वशी का दोटूक उत्तर (मंत्र 2):**
     उर्वशी कहती हैं- "गन्धवीं मम्येव अब वर्थ हि मैं प्रथम उषा की तरह चली गई हूँ। तब पर लौट जाओ पुरूरवा, मुझे ग्राम करना अब हवा को पकड्ने के समान कठिन है।"

5. **पुरूरवा का आत्मवादा का भय (मंत्र 14) एवं उर्वशी का अंतिम सत्य (मंत्र 15):**
   - **पुरुरवा का आत्मवदा का भय (मंत्र 14):**
     राजा अत्यंत दुखी होकर कहते हैं कि यदि तुम नहीं लोटीं, तो मैं भेड़ियों का भध्य बन जाऊँगा या नीचे गिरकर प्राण त्याग दूँगा।
     'अथः शवति निष्ठातिमुपस्थोडषैनं वृका रभसाभो अवतन्ति...।'
   - **उर्वशी का अंतिम सत्य (मंत्र 15):**
     उर्वशी यहाँ प्रसिद्ध मुक् कहती हैं कि स्त्रियों का प्रेम भेड़ियों के हुदय के समान है (अर्थात वे भावना से अधिक नियमों और स्थितियों को प्रधानता देती हैं)। वह कहती है- "पुरूरवा! मत मरो, मत गिरो। स्त्रियों की मित्रता स्थायी नहीं होती।"
     "न वै श्रैप्रायामि सहस्त्रयणी मनि शालावाकपाणों हृदयन्तरेत्ता।"

1. **पुरूरवा-उर्वशी संवाद (ऋग्वेद 10.10)**
   यह सूत्क नैतिकता और धर्म के कठोर पालन का आदर्श प्रस्तुत करता है। नैतिक मर्यादा और सूष्टि-क्रम के मध्य के कृन्दू को दर्शाता है।
   - मण्डल एवं सूत्क संख्या: 10.10 (10वाँ मण्डल, 10वाँ सूत्क)
   - ऋषि एवं देवता: यम और यमी (दोनों ही ऋषि और देवता के रूप में परस्पर संवाद करते हैं)।
   - पात्र: विवस्वान के पुत्र यम और पुत्री यमी (भाई-बहन)।
   - कुल मन्त्र एवं छन्द: 14 मन्त्र; त्रिश्नुपू छन्द।

2. **यम-यमी संवाद (ऋग्वेद 10.10)**
   यह सूत्क नैतिकता और धर्म के कठोर पालन का आदर्श प्रस्तुत करता है। नैतिक मर्यादा और सूष्टि-क्रम के मध्य के कृन्द को दर्शाता है।
   - मण्डल एवं सूत्क संख्या: 10.10 (10वाँ मण्डल, 10वाँ सूत्क)
   - ऋषि एवं देवता: यम और यमी (दोनों ही ऋषि और देवता के रूप में परस्पर संवाद करते हैं)।
   - पात्र: विवस्वान के पुत्र यम और पुत्री यमी (भाई-बहन)।
   - कुल मन्त्र एवं छन्द: 14 मन्त्र; त्रिष्ठुपू छन्द।

3. **पुरूरवा-उर्वशी संवादसूत्ते उर्वशी कवि वर्णणि पुरूरवसा सह उवाच? (उर्वशी कितने वर्षो पुरुरवा के साथ रही?)**
   (A) दो वर्ष (B) तीन वर्षाणि (C) चत्वारि वर्षाणि (4 वर्ष) (D) दश वर्षाणि

1. पुरूरवा-उर्वशी संवाद (ऋग्वेद 10.10) का कथानक केवल एक प्रेम कथा नहीं है, बल्कि यह मर्ग्य (मनुष्य) और अमर (अप्सरा) के बीच के द्वंद्ध, विरह और जीवन की नम्थरता का चित्रण है।

2. **यम-यमी संवाद (ऋग्वेद 10.10)**
   यह सूक्त नैतिकता और धर्म के कठोर पालन का आदर्श प्रस्तुत करता है। नैतिक मर्यादा और सूष्टि-क्रम के मध्य के द्वंब्द्ध को दर्शाता है।
   - मंडल एवं सूक्त संख्या: 10.10 (10वॉ मंडल, 10वॉ सूक्त)
   - कषि एवं देवता: यम और यमी (दोनों ही कषि और देवता के रूप में परस्पर संवाद करते हैं)।
   - पात्र: विवस्वान के पुत्र यम और पुत्री यमी (भाई-बहन)।
   - कुल मंत्र एवं छन्द: 14 मंत्र; त्रिष्ट्रपु छन्द।

3. यमी अपने भाई यम से विवाह का आग्रह करती है ताकि मानव वंश का विस्तार हो सके। वह तर्क देती है कि गर्भ में भी हम साथ थे। यम इसे 'पाप' कहकर ठुकरा देते हैं और कहते हैं कि कारण के वूत्त सब देख रहे हैं।
   - **कथानक:** यमी अपने भाई यम से विवाह का आग्रह करती है ताकि मानव वंश का विस्तार हो सके। वह तर्क देती है कि गर्भ में भी हम साथ थे। यम इसे 'पाप' कहकर ठुकरा देते हैं और कहते हैं कि कारण के वूत्त सब देख रहे हैं।
   - **दार्शनिक एवं नाटकीय सार:** जुड़वा बहन यमी अपने भाई यम से सन्तानोत्पत्ति हेतु विवाह का प्रस्ताव करती हैं। यम इसे 'पाप' और 'अधर्म' कहकर ठुकरा देते हैं, क्यॉकि वे धर्म के पक्षक हैं।

- **महत्वपूर्ण मन्त्र (स्मृति):**
   - "न वा उ ते तत्वा तत्वं संपयच्यां पापमाहश्ं: स्वयरं निगच्छा," (10.10.12) * अर्थ: मैं तुम्हारे शरीर से संसर्ग नहीं करूँगा, क्योंकि अपनी बहन के पास जाने वाले को ऋषि 'पापी' कहते हैं।

     यह सूक्त केवल एक भाई-बहन का संवाद नहीं है, बल्कि यह 'ऋत' (वैधिक नियम) और 'नैतिकता' के मध्य के संधर्ष को दर्शाता है।

   1. **यम-यमी संवाद (ऋग्वेद 10.10) - विस्तृत विवेचन**

   **i. पृष्ठभूमि और परिचय**

   - **पात्र:** यम (मृत्यु के प्रथम अनतरक और धर्मराज) और यमी (उनकी जुड़वा बहन)।
   - **वंशः** ये दोनों विवस्वान (सूर्य) और सरण्यु (त्वस्सा की पुत्री) की सन्तानें हैं।
   - **उद्रेश्य:** यमी का उद्रेश्य मानव वंश की रक्षा हेतु यम के साथ मैथुन सम्बन्ध स्थापित करना है, जबकि यम का उद्रेश्य सनातन धर्म और नैतिक मर्यादा की रक्षा करना है।

   **ii. यमी के तर्क (विवाह के पक्ष में)**

   यमी अत्यंत चतुर और भावुक तकों का प्रयोग करती है:

   एकान्त का लाभ: वह कहती है कि हम इस निर्जन द्वीप पर अकेले हैं, यहाँ हमें कोई देखने वाला नहीं है।

   - **सुष्टिग समस्या:** यमी तर्क देती है कि सृगटि तो हमें गर्भ में ही 'स्यतितृ' (पति-पत्नी) के रूप में बनाया था, अतः हमारा मिलन प्राकृतिक है। "गर्भ नु नो जनिता दम्पती संवेदस्य सविता विवस्वानः।" (10.10.5)
   - **देवों की इच्छा:** वह कहती है कि देवता भी चाहते हैं कि मनुष्य की संतति समाप्त न हो, इसलिए पितृ-ऋण से मुक्ति हेतु यह आवश्यक है।

**4. संवाद का अंत**

जब यम किसी भी प्रकार नहीं मानते, तो यमी कुटित होकर उन्हें 'क्लीव' (नपुंसक) कहती है और कहती है कि तुम पत्थर के समान कठोर हदय वाले हो। वह कहती है कि कोई और पुरुष नियुति ही मुझे प्राप्त करेगा। यम उसे शान्ति से समझाते हैं कि वह किसी अन्य योग्य पुरुष का वरण करे और सुखी रहे।

**Q. 'गर्भ नु नौ जनिता दम्पती क:' - इति कश्या: कथनम् अस्ति? (UGC NET 2019, 2022)**

(A) उर्वश्था: (B) यम्या:

(C) सरमाया: (D) लोमपपुत्राया:

5. **सरमा-पणि संवाद (ऋन्वेद 10.108)**

यह एक कूटनीतिक (Diplomatic) संवाद है जहां एक दूत की निर्यीस्तता दिखाई गई है।

- मण्डल एवं सूत्त संख्या: 10.108 (10वां मण्डल, 108वां सूत्त)
- पात्र: सरमा (इन्द्र की दूत/दूतीयूनी) और पणि (गीओं को छुपाने वाले असुर)
- विषय: पणि, देवता: सरमा (इन्द्र की दूती)
- कुल मन्त्र: 11, छन्द: त्रिष्ट्प्र
- दार्शनिक एवं नाटकीय सार: पणियों ने देवताओं की गौएँ चुरा ली हैं। सरमा उन्हें खोजने जाती है। पणि उसे प्रलोभन देते हैं कि वह उनकी 'बहन' बनकर वहीं रह जाए, पर सरमा इन्द्र की शत्ति का भय दिखाकर उन्हें चेतावनी देती है।
- महत्वपूर्ण मन्त्र (भुत्ति):
  "गाहं ते वड़ेद कैयं द्रमभस्त सस्येद्र दूतीसमं स्तुता" (10.108.4) अर्थ: में उस इन्द्र वहो वय में नमो वाला (दृभ्य) नहीं मानती, जिसकी दूती बनकर मैं इतनी दूर से आई हूँ।

**सरमा-पणि संवाद (ऋग्वेद 10.108) - विस्तृत विवेचन**

1. **पृष्ठभूमि और परिचय**
   - पात्र: सरमा (इन्द्र की दूत), जिसे 'देवयुनी' भी कहा जाता है) और पणी (असुरों का एक समूह जो व्यापारिक बुद्धि वाले और अत्यंत कृपण/लोभी थे।
   - कथानक: पणियों ने देवताओं की 'अग्नि' रूनी गायों को चुराकर एक अत्यंत दुर्गम गुफा (सात नदीं के पार) में छिपा दिया था। इन्द्र ने सरमा को उन गायों का पता लगाने के लिए भेजा।
   - संवाद का आरम्भ: यह संवाद तब शुरू होता है जब सरमा कठिन सात नदी को पार कर पणियों के द्वार पर पहुँचती है।

2. **पणियों के तर्क और प्रलोभन (असुर पक्ष)**

   पणि पहले सरमा को डराने की कोशिश करते हैं और फिर उसे अपनी ओर मिलाने का प्रयास करते हैं:
   - आधर्ष और भयः पणि पूछते हैं कि तुम इतनी घमंडी सरमा! नदी को कैसे पार कर आई? यहा ँआने का तुम्हारा उद्देश्य क्या है?
   - असत्य का भय: वे कहते हैं कि हमारा अय अत्यंत तीक्ष्ण है, तुम हमसे जीत नहीं सकती।
   - प्रलोभन का प्रस्ताव: जब उन्हें लगता हैं कि सरमा निडर है, तो वे कूटनीति बदलते हैं- "हे सरमा! तुम हनारी 'गहन' बन जाओ, हम तुम्हें हजारों गायों का हिस्सा देंगे।"
   - "एवा च त्वं सरम आजागथा... स्वसारे त्वा कृपणे मा पुनर्णां अप ते गवा सुमने भवामा!" (10.108.9)

3. **सरमा के निर्णय उत्तर (बेह पक्ष)**

   सरमा एक आदर्श दूत की तरह व्यवहार करती है:
   - इन्द्र की महिमा: सरमा कहती है कि मैं उस इन्द्र की दूती हूँ जिसके तेज के सामने तुम टिक नहीं सकते। इन्द्र को कोई जीत नहीं सकता, वह सबको जीतने वाला है।
   - "गाहं ते वेद दर्यं दभस्तम सट्येद् दूतीसम् स्तुताः। " (10.108.4)
   - प्रलोभन का निराकरण: वह पाणियों के 'भाई-बहन' वाले प्रस्ताव को ठुकरा देती है और कहती है कि मैं भाई या बहन का रिश्ता नहीं जानती, मैं केवल इन्द्र और अम्नि ऋषियों को जानती हूँ जो तुम्हें नष्ट कर देंगे।
   - चेतावनी: वह कहती है कि ऋषि अयांस्यू और अम्नि यहाँ आएंगे और तुम्हारी इस गुफा को छिन्न-भिन कर देंगे, तब तुम्हारी ये गौएँ मुक्त हो जाएँगी।

4. **संवाद का निष्कर्ष**

   सरमा के अडिग रहने और इन्द्र की शक्ति के वर्णन से पाणि भयभीत हो जाते हैं। यह स्पष्ट करता हैं कि सत्य और निष्ठा के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति बड़े से बड़े प्रलोभन को भी ठुकरा सकता है।

6. **विश्वामित्र-नदी संवाद (अन्वेद 3.33)**
   - यह सूक्त प्रकृति के साथ ऋषि के एकात्म भाव और प्रार्थना की शक्कि को दर्शाता है।
   - यह सूक्त प्रकृति और मानव के आत्मीय सम्बन्धों का प्रतीक है।
   - विश्बामित्र-नदी संवाद (3.33) अन्य संवाद सूक्तों से भिन्न है। जहाँ अन्य सूक्तों में संघर्ष या प्रलोभन है, यहाँ ‘श्रद्धा’, ‘विनम्रता’ और 'प्रार्थना' का अद्धदुत समन्वय है।
   - सन्दर्भ: यह तौररि मण्डल का 33वाँ सूल्क है।
   - पात्र: ऋषि विश्बामित्र और विपाशा (व्यास) एवं शुतुद्रि (सतलुज) नदियाँ।
   - ऋषि: विश्बामित्र, देवता: नदियाँ (विपाशा और शुतुद्रि)।
   - कुल मन्त्र 13, धन्द: त्रिष्टुपू (मन्त्र 13 अनुष्टुपू में है)।
   - कथानक: विश्बामित्र भ्रस्तवरंभी राजाओं, अपनी सेना और रथों के साथ के साथ विपाशा (व्यास) और शुतुद्रि (सतलुज) नदियों के संगम पर पहुँचते हैं। वे नदियों को पार करना चाहते हैं। नदियाँ उफान पर हैं। विश्वामित्र उनसे मार्ग देने की प्रार्थना करते हैं। नदियाँ उन्हें 'भाई' और 'माता' मानकर अपना जल कम कर लेती हैं ताकि रथ और गाड़ियाँ पार हो सकें।
   - **महत्वपूर्ण मन्त्र (स्मृति):**
     "ओ घु स्वसारः कायर्दे शूणोत यथो वो दूरद्रनमा रथेन।" (3.33.9) अर्थातू हे प्यारी बहनों (नदियों)! मुझ स्तुति करने वाले की बात सुनो, जो रथ और बैलगाड़ियों के साथ दूर से आया हूँ।

**विश्बामित्र-नदी संवाद (ऋग्वेद 3.33) - विस्तृत विवेचन**

1. **पृष्ठभूमि और परिचय**
   - **पाठ:** ऋषि विश्बामित्र (कुशिक के पुत्र) और दो नदिर्या- विपाशा (आधुनिक व्यास) एवं शुतुद्रि (आधुनिक सतलज)।
   - **कथानकः** ऋषि विश्बामित्र भरतवंश के राजाओं और अपनी विशाल सेना के साथ धन-धान्य और रथों को लेकर आ रहे थे। मार्ग में विपाशा और शुतुद्रि नदियों का संगम मिला, जो वहाँ रुक के कारण उपवन पर थी। उन्हें पार करना असंभव था। तब विश्बामित्र ने अपनी 'वाक्-शल्कि' (स्तुति) से नदियों को प्रसन्न किया।
   - **विशेषता:** यह सुल्क ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में है, जबकि अन्य प्रमुख संवाद 10 वें मण्डल में हैं।
2. **विश्वामित्र की प्रार्थना (ऋषि पक्ष)**
   विश्वामित्र नदियों को माँ और बहन के समान सम्बोधित करते हैं:
   - **प्रशंसा:** वे नदियों की तुलना 'खड़ेबो को चाटने वाली गायों' और 'धेन से दोहने वाली घोड़ियों से करते हैं।
   - **अनुनय-विनय:** ऋषि प्रार्थना करते हैं कि हे नदियों! आप अपनी लहरों को इतना धीमा कर लें कि हमारे रथों की धूरी (अक्ष) न डूबे। "ओ घु स्वसारः कार्यो शुणोत यथो वो दरादनमा रथेन।" नि घु ममध्वं भवता सुपुरारा अधोक्षा: सिन्धव: सौत्यभि:।।" (3.33.9) अर्थ: हे बहनों! मुझ स्तुति करने वाले की बात सुनो। मैं दूर से रथों के साथ आया हूँ। आप झुक जाओ (जल कम कर लो) ताकि हम सुरक्षिपूर्वक पार हो सकें।
3. **नदियों का उत्तर (प्रकृति पक्ष)**
   नदियाँ पहले अपनी शक्ति और इन्द्र द्वारा बनाए गए मार्ग का गौरव गान करती हैं, फिर ऋषि की भक्ति से पिघल जाती हैं:
   - **इन्द्र का अनुस्मरण:** नदियों कहती हैं कि हम इन्द्र द्वारा खोदे गए मार्ग पर चलती हैं; सविता देव हमारे प्रेरक हैं, हम रुक नहीं सकतीं।
   - **वात्सल्य भाव:** ऋषि की विनम्रता देखकर वे कहती हैं- "हे ऋषि! हम आपकी बात मानेंगी। हम वैसे ही झुक जाएँगी जैसे एक माता अपने पुत्र को दूध पिलाने के लिए झुकती है या एक युवती अपने पति के आलिंगन के लिए झुकती है।"
     "ते ते सुना भरावे चक्रमे नि ते नसे पीयानवे मर्थ..." (3.33.10)
4. **संवाद का निस्कर्ष**
   ऋषि की प्रार्थना सफल होती है। नदियों मार्ग दे देती हैं और भरतवंशी सेना सकुशल पार हो जाती है। यह सूक्त मानव की इच्छाशक्ति और प्रकृति के प्रति सम्मानजनक व्यवहार का उत्कृष्ट उदाहरण है।